

रचना या पद्यमय वर्णन 2. काव्य 3. कवि की कृति 4. पद्य-रचना।

**कविताई स्त्री.** (तद्.) दे. कविता।

**कवित्त पुं.** (तत्.) 1. काव्य, कविता 2. 31 से 33 अक्षरों (वर्णों) वाला, मनहर, जनहरण, कलाधर, रूपघनाक्षरी, जलहरण, डमरु, कृपाण, विजया और देवघना क्षारी-नामक नौ प्रकारों का दंडक वार्णिक छंद 4. नाक्ष. वह कविता जिसमें कल्पना प्रसूत अतिशयोक्ति पूर्ण कथन हो उदा. यह गुनकथन कवित्त न होई -बोधा ग्रं. (7)।

**कवित्व पुं.** (तत्.) 1. काव्य-रचना 2. काव्य-कौशल, रचना-कौशल 3. काव्य-प्रतिभा या शक्ति 4. काव्य का गुण 5. बुद्धि, समझ, प्रज्ञा।

**कवि-दृष्टि स्त्री.** (तत्.) 1. कवि अर्थात् रचनाकार का दृष्टिकोण 2. विचारधारा या उद्भावना 3. कवि-कल्पना।

**कवि-निरंकुशता स्त्री.** (तत्.) कवि को प्राप्त वह विशेष स्वतंत्रता या अधिकार जिसके आधार पर वह अपनी रुचि या विशिष्टता के अनुरूप व्याकरण के नियमों के विपरीत शब्द-रूपों की स्थितियों तथा छंद विधान का मनमाना प्रयोग कर सकता है।

**कवि-पुत्र पुं.** (तत्.) कवि का सुत, बेटा, अर्थात् शुक्राचार्य, सूर्य-पुत्र का अर्थ सूर्य भी होता है।

**कवि-प्रसिद्ध स्त्री.** (तत्.) दे. कविसमय।

**कवि-भूष पुं.** (तत्.) 'कविराज', श्रेष्ठ कवि, कवियों का राजा।

**कविराज पुं.** (तत्.) 1. कवियों में श्रेष्ठ 2. चारण 3. वैद्यों की एक उपाधि।

**कविराय पुं.** (तद्.) दे. कविराज।

**कविलास पुं.** (तत्.) कैलाश, कैलास, स्वर्ग।

**कविसत्तम वि.** (तत्.) कवियों में श्रेष्ठ जैसे- अश्वघोष और कालिदास जैसे- कवि-सत्तम - निराला (गीत कुंज पृ. 54)।

**कवि-समय पुं.** (तत्.) वर्णन संबंधी कवियों में प्रसिद्ध कतिपय ऐसी परिपाटियाँ व मान्यताएँ जिनकी सत्यता संदिग्ध होने पर भी कवियों द्वारा (काव्य में) मान्य एवं प्रसिद्ध है जैसे- हंस का दूध और पानी के मिश्रण में से दूध मात्र पी लेने विषयक गुण को केवल 'कवि समय' माना जाता है।

**कवि-स्वातंत्र्य पुं.** (तत्.) काव्य. 1. रचना को प्रभावशील बनाने के लिए अथवा उसके प्रभाव की रक्षा के लिए कवि को प्राप्त वह छूट या स्वतंत्रता जिसके आधार पर किसी तथ्य अथवा कठोर नियम की उपेक्षा या उल्लंघन कर सकता है 2. कवि-निरंकुशता।

**कवींद्र पुं.** (तत्.) श्रेष्ठ कवि।

**कवीश्वर पुं.** (तत्.) 1. कवियों में श्रेष्ठ, सर्वोत्तम कवि, कवींद्र।

**कवीसुर पुं.** (तद्.) दे. कवीश्वर।

**कवींछ स्त्री.** (देश.) हल्की-हल्की कालिमा, कालेपन झलक, कालिख।

**कव्य वि.** (तत्.) वह अन्न या द्रव्य जिससे पिंडदान-पितृ-यज्ञादि किए जाएँ 2. स्तवन करने योग्य 3. पुं. एक पितृलोक।

**कव्यवाह-कव्यवाहन पुं.** (तत्.) 1. पितृपक्ष के समय की अग्नि जिसमें पिंड से आहुति दी जाती है 2. अग्नि।

**कव्वाल पुं.** (अर.) 1. कव्वाली गाने वाला 2. कव्वाली गायन का पेशा करने वाला।

**कव्वाली स्त्री.** (अर.) संतों की कब्रों आदि पर गाए-जाने वाला इस्लामी (समूह) गीत 2. कव्वाली की शैली में रचित तथा गाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के गीत 3. (संगीत) एक ताल।

**कशमकश स्त्री.** (फा.) 1. खींचातानी 2. भीड़-भाड़ 3. धक्कम-धक्का 4. आगा-पीछा, सोच-विचार, असमंजस 5. संघर्ष, प्रतिस्पर्धा।

**कशमीरा/कश्मीरा पुं.** (देश.) एक प्रकार का मोटा, ऊनी कपड़ा।